Lecture-5

Topic- Features & Sources of Indian Political Thought

Degree-I(Hons.) Paper-2

Date-26-6-2021

By Rahul Kumar Jha
Dept.of Pol.Science

भारतीय राजनीतिक चिंतन के स्रोत एवं विशेषताएँ :-

मुख्य-मुख्य मान्यताएं :-

भारतीय राजनीति-चिंतन से जुड़ी मुख्य-मुख्य मान्यताओं का विवरण इस प्रकार है-

धर्म और दंड की संकल्पनाएं :-

'धर्म' और 'दंड' प्राचीन भारतीय राजनीति-चिंतन की आधारभूत संकल्पनाएं हैं। धर्म मानव-समाज की अनुलंघनीय है, दंड उसका प्रहरी है। 'दंड' का अर्थ है डंडा जो कि बल-प्रयोग का प्रतीक

है। धर्म या कानून का पालन करवाने के लिए बल-प्रयोग की कला 'दंडनीति' है। अतः 'दंडनीति' एवं 'राजनीति' का भी पर्याय है।

राजनीति का एक पर्याय अर्थशास्त्र भी है। इसके महत्व को समझने के लिए 'अर्थ' शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करना जरूरी है। हिंदू धर्म के अंतर्गत मानव-जीवन के चार महान् लक्ष्य माने गए हैं जिन्हें चार पुरुषार्थ कहा जाता है: (1) धर्म (2) अर्थ (3) काम (4) मोक्ष। धर्म वस्तुतः समाज के नैतिक मूल्यों का समुच्चय है। इसमें व्यक्ति के मुख्य-मुख्य कर्तव्यों की चर्चा की गयी है। सामाजिक जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए इन कर्तव्यों का पालन जरूरी समझा जाता है। फिर, इन

कर्तव्यों का पालन करके व्यक्ति जो 'पुण्य' अर्जित करता है, वह उसके आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देता है।

अर्थ का सरोकार भौतिक कल्याण के साधनों को बढ़ाने से है। काम व्यक्ति को ऐंद्रिय सुख की प्राप्ति की कला से परिचित कराता है। मोक्ष से संबंधित चिंतन के अंतर्गत व्यक्ति को परम कल्याण का मार्ग दिखाया जाता है ताकि उसकी आत्मा जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त होकर पद को प्राप्त कर सके।

धर्म का विवेचन धर्मशास्त्रों का विषय है। अर्थ का विवेचन अर्थशास्त्र में और काम का विवेचन कामशास्त्र में किया गया है। मोक्ष का महत्व इन सबसे बढ़कर है, और वह भी धर्मशास्त्र एवं दर्शनशास्त्र का विषय है।'

CHAPTER CONTINUES---